'वैदिक ज्ञान की सत्यता का आधार उसकी वैज्ञानिकता'

अक्षर वार्ता @ नई दिल्ली। वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर वैदिक स्टडीज़ और वाईडर एसोसिएशन फॉर वैदिक स्टडीज नामक दोनों संस्थाओं यानी वेव्ज़ ने भारतीय विद्या भवन के सौजन्य से 'वेव्ज़-2016' नामक चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। यह सम्मेलन वेव्ज़, यू.एस.ए का 12वॉ और वेव्ज़, भारत का 20वॉ सम्मेलन था, जो भारतीय विद्या भवन के दिल्ली केन्द्र में 15 से 18 दिसम्बर की तिथियों में आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. महावीर अग्रवाल, पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के करकमलों से हुआ।

वेव्ज़ सम्मेलन के विषय 'वैदिक ज्ञान के वैज्ञानिक पक्ष' पर विचार रखने के लिए अमेरिका, बेलजीयम, ईज़राईल, नेपाल, फ्रांस जैसे देशों से श्री जैफरी आर्मस्ट्रांग, डॉ. रोबर्ट एच. श्रीन्डर, डॉ. इन्द्राणी राम प्रसाद, डॉ. नरहरि आचार, डॉ. माकील स्टर्नफील्ड, प्रो. बलराम सिंह, श्रीमति. मधु शर्मा, डॉ. कुमार नोचर, डॉ. चन्द्र खन्ना, डॉ. मदन लाल गोयल, डॉ. कोमा कर्पेन्टर, डॉ. जोन किन्मेन, डॉ. कोन्राड इल्स्ट, श्री निलेश ओक आदि प्रमुख 25 विदेशी और लगभग 150 भारतीय यथा- बैंगलोर से भक्ति निष्काम शान्ता, भक्ति निष्काम मुनि, प्रो. सी एल. प्रभाकर; कोलकश्रा से सोमा बसु; असम से डॉ. शकुन्तला; पूंचकुला से आचार्य सन्तकुमार; जोधपुर से प्रो. राम गोपाल; पंजाब से डॉ. अरुणा शुक्ला; हरिद्वार से डॉ. प्रतिभा शुक्ला; दिल्ली से प्रो. शारदा शर्मा, डॉ. आर. एस. कौशल, प्रो. एस. आर. भट्ट, प्रो. रमेश भारद्वाज, डॉ. मदन मोहन बजाज, डॉ. सरोज गुलाटी, डॉ. सति शंकर, डॉ. उर्मिल रुस्तगी, श्री वाई के. वाधवा, डॉ. आर पी. सिंह, डॉ. प्रवेश सक्सेना, डॉ. ईश नारङ्ग; पड्डुचेरी से प्रो. के. श्रीनिवास; धामपुर से डॉ. पुनम घई; फरिदाबाद से डॉ. ललिता कुमारी जनुजा, डॉ. दिव्या त्रिपाठी; केरल से डॉ. एम. एस. शिब्बा, कानपुर से डॉ. नीलम त्रिवेदी; आन्ध्र प्रदेश से कर्नल मूर्ति; अजमेर से डॉ. अनिता खुराना; बरेली से डॉ. श्वेतकेतु शर्मा आदि विद्वानों ने भाग लिया।

सम्मेलन में कुल 22 सत्रों में मुख्य व्याख्यान, परिचर्चा, स्काईप प्रस्तुतीकरण, समानन्तर एवं पोस्टर सत्रों में प्रतिभागियों ने अपने विचारों को व्यक्त किया। प्रत्येक सत्र में संस्कृत, हिन्दी और आङ्ग्ल भाषाओं में शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। प्रश्नोश्रर द्वारा पत्र-वाचकों के साथ संवाद इस सम्मेलन की विशेषता रही। 'भारतीय विद्या और वैदिक ज्ञान की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासंगिकता' पर युवाओं ने भी परस्पर विचार-विर्मश किया। इसमें प्रमुखतः डॉ. रणजित बेहेरा, डॉ. वेद मित्र शुक्ल, डॉ. अपर्णा धीर एवं डॉ. कैलाश चन्द ने युवा-शोधार्थिओं का प्रतिनिधित्व किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक गतिविधियों के अन्तर्गत दिनांक 16 दिसम्बर को दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा महर्षि बौद्धायन संगृहीत 'भगवदज्जुकम्' नामक नाठक का मंचन किया गया।